चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-4-26	4	2-4

मशरूम उत्पादन पर्यावरण अनुकूल व्यवसाय

- हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक का दिया प्रशिक्षण
- राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली व हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

मुख्य अतिथि डा. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान ने मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. नरेश कौशिक ने बताया कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौधे रोग विभाग के अध्यक्ष डा राकेश कुमार चुघ ने बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है।

संस्थान के सह-निदेशक डा. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण के संयोजक डा. सतीश कुमार मेहता ने बटन, किंग आयस्टर, ढींगरी और दूधिया मशरूम जैसे खाद्य मशरूम के साथ-साथ शिटाके, कीड़ा जड़ी, गैनोडर्मा और लायन्स माने जैसे औषधीय एवं विशेष मशरूम की उत्पादन तकनीक, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. डी. के. शर्मा, डा. संदीप भाकर, मशरूम लैब इंचार्ज डा. जगदीप सिंह, सब्जी विभाग के वैज्ञानिक डा. विकास काम्बोज समापन समारोह में डा. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	19-4-26	9	5-8

कम लागत में मशरूम पैदावार कर बनें आत्मनिर्भर

■ राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान की ओर से 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है।

हिसार। मुख्य अतिथि डॉ. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ। फोटो: हरिभूमि

दिया जा रहा प्रशिक्षण

संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास के लिए नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं। इस मौके पर प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. सतीश कुमार मेहता, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. विकास कम्बोज आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-4-26	3	7-8

'मशरूम उत्पादन तकनीक' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

मुख्य अतिथि डॉ. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ।

हिसार, 18 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम प्रसंस्करण तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जबकि डॉ. संदीप भाकर ने हरियाणा सरकार की अनुदान योजनाओं की जानकारी साझा की। समापन समारोह में डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19-4-26	5	5-8

भूमिहीन और बेरोजगार युवा कम लागत से मशरूम उत्पादन कर बनें आत्मनिर्भर : डॉ. नरेश कौशिक

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

हिसार, 18 अप्रैल (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि

मुख्य अतिथि डॉ. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ।

आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है। उन्होंने बताया कि जागरूकता की कमी के कारण इसका प्रचलन सीमित है हरियाणा में अनुकूल मौसम के अनुसार किसान चार प्रकार की मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं जिन्हें सरकार द्वारा भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ सतीश कुमार मेहता ने बटन, किंग आयस्टर , ढींगरी और दूधिया मशरूम जैसे खाद्य मशरूम के साथ-साथ शिटाके, कीड़ा जड़ी, गैनोडर्मा और लायन्स माने जैसे औषधीय एवं विशेष मशरूम की उत्पादन तकनीक, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम प्रसंस्करण तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जबकि डॉ. संदीप भाकर ने हरियाणा सरकार की अनुदान योजनाओं की जानकारी साझा की। मशरूम लैब इंचार्ज डॉ जगदीप सिंह ने बटन मशरूम उत्पादन पर विस्तृत जानकारी साझा की। सब्जी विभाग के वैज्ञानिक डॉ. विकास काम्बोज ने बताया कि मशरूम उत्पादन के बाद बचा अवशेष जैविक खाद के रूप में उपयोगी है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और फसलों की गुणवत्ता में सुधार होता है। समापन समारोह में डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

विभिन्न कार्यों हेतु निविदा आमंत्रण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19-4-26	8	3-5

मशरूम उत्पादन कर बनें आत्मनिर्भर : डॉ. कौशिक

भास्कर | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है। संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19-4-26	2	8

मशरूम का उत्पादन कर आत्मनिर्भर बनें

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने कहा कि कम लागत से मशरूम उत्पादन कर युवा आत्मनिर्भर बन सकते हैं। वह एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान ने मशरूम उत्पादन तकनीक पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

शिविर में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और हरियाणा के युवा शामिल हुए। डॉ. कौशिक ने बताया कि मशरूम उत्पादन पर्यावरण-अनुकूल, कम लागत वाला व्यवसाय है जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण और औषधीय गुणों पर जानकारी दी। आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी अन्य मशरूम से कम नहीं है। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.04.2026	--	--

भूमि रहित और बेरोजगार युवा कम लागत से मशरूम उत्पादन कर बनें आत्मनिर्भर : डॉ. नरेश

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

सिटी पल्स न्यूज हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध

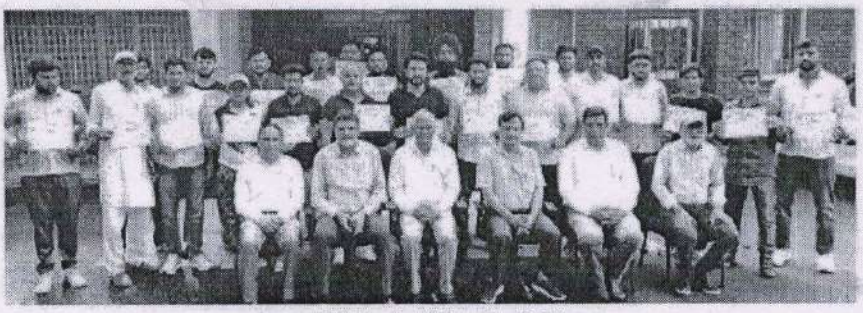

मुख्य अतिथि डॉ. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ

रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है। उन्होंने बताया कि जागरूकता की कमी के कारण इसका प्रचलन सीमित है हरियाणा में अनुकूल मौसम के अनुसार किसान चार प्रकार की मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं जिन्हें सरकार द्वारा भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं।

प्रशिक्षण के संयोजक डॉ सतीश कुमार मेहता ने बटन, किंग आयस्टर , ढींगरी और दूधिया मशरूम जैसे खाद्य मशरूम के साथ-साथ शिटाके, कीड़ा जड़ी, गैनोडर्मा और लायन्स माने जैसे औषधीय एवं विशेष मशरूम की उत्पादन तकनीक, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम प्रसंस्करण तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जबकि डॉ. संदीप भाकर ने हरियाणा सरकार की अनुदान योजनाओं की जानकारी साझा की। मशरूम लैब इंचार्ज डॉ जगदीप सिंह ने बटन मशरूम उत्पादन पर विस्तृत जानकारी साझा की।

सब्जी विभाग के वैज्ञानिक डॉ. विकास काम्बोज ने बताया कि मशरूम उत्पादन के बाद बचा अवशेष जैविक खाद के रूप में उपयोगी है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और फसलों की गुणवत्ता में सुधार होता है। समापन समारोह में डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	19.04.2026	--	--

कम लागत में मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनें युवा : डॉ. नरेश कौशिक

राजस्थान, यूपी, दिल्ली व हरियाणा से प्रतिभागियों ने लिया प्रशिक्षण में भाग

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 19 अप्रैल : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।

समापन अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल और कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है।

पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण व औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ऑयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है। इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत लगभग 20 से 22 रुपये प्रति किलोग्राम आती है। उन्होंने कहा कि जागरूकता की कमी के कारण इसका प्रचलन सीमित है, जबकि हरियाणा में अनुकूल मौसम के अनुसार किसान चार प्रकार की मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं, जिन्हें सरकार द्वारा भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिससे कई युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश कुमार मेहता ने बटन, किंग ऑयस्टर, ढींगरी और दूधिया जैसे खाद्य मशरूम के साथ-साथ शिटाके, कीड़ा जड़ी, गैनोडर्मा और लायन्स माने जैसे औषधीय मशरूम की उत्पादन तकनीक, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.के. शर्मा ने मशरूम प्रसंस्करण तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जबकि डॉ. संदीप भाकर ने हरियाणा सरकार की अनुदान योजनाओं की जानकारी साझा की। मशरूम लैब इंचार्ज डॉ. जगदीप सिंह ने बटन मशरूम उत्पादन पर विस्तृत जानकारी दी।

सब्जी विभाग के वैज्ञानिक डॉ. विकास काम्बोज ने बताया कि मशरूम उत्पादन के बाद बचा अवशेष जैविक खाद के रूप में उपयोगी होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और फसलों की गुणवत्ता में सुधार होता है।

समापन समारोह में डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दक्ष दर्पण न्यूज	18.04.2026	--	--

भूमिहीन और बेरोजगार युवा कम लागत से मशरूम उत्पादन कर बनें आत्मनिर्भर:डॉ. नरेश कौशिक

» राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

दक्ष दर्पण

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है। उन्होंने बताया कि जागरूकता की कमी के कारण इसका प्रचलन सीमित है हरियाणा में अनुकूल मौसम के अनुसार किसान चार प्रकार की मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं जिन्हें सरकार द्वारा भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास हेतु नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ सतीश कुमार मेहता ने बटन, किंग आयस्टर , ढींगरी और दूधिया मशरूम जैसे खाद्य मशरूम के साथ-साथ शिटाके, कौड़ा जड़ी, गैनोडर्मा और लायन्स माने जैसे औषधीय एवं विशेष मशरूम की उत्पादन तकनीक, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम प्रसंस्करण तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जबकि डॉ. संदीप भाकर ने हरियाणा सरकार की अनुदान योजनाओं की जानकारी साझा की। मशरूम लैब इंचार्ज डॉ जगदीप सिंह ने बटन मशरूम उत्पादन पर विस्तृत जानकारी साझा की। सब्जी विभाग के वैज्ञानिक डॉ. विकास काम्बोज ने बताया कि मशरूम उत्पादन के बाद बचा अवशेष जैविक खाद के रूप में उपयोगी है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और फसलों की गुणवत्ता में सुधार होता है। समापन समारोह में डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए ।